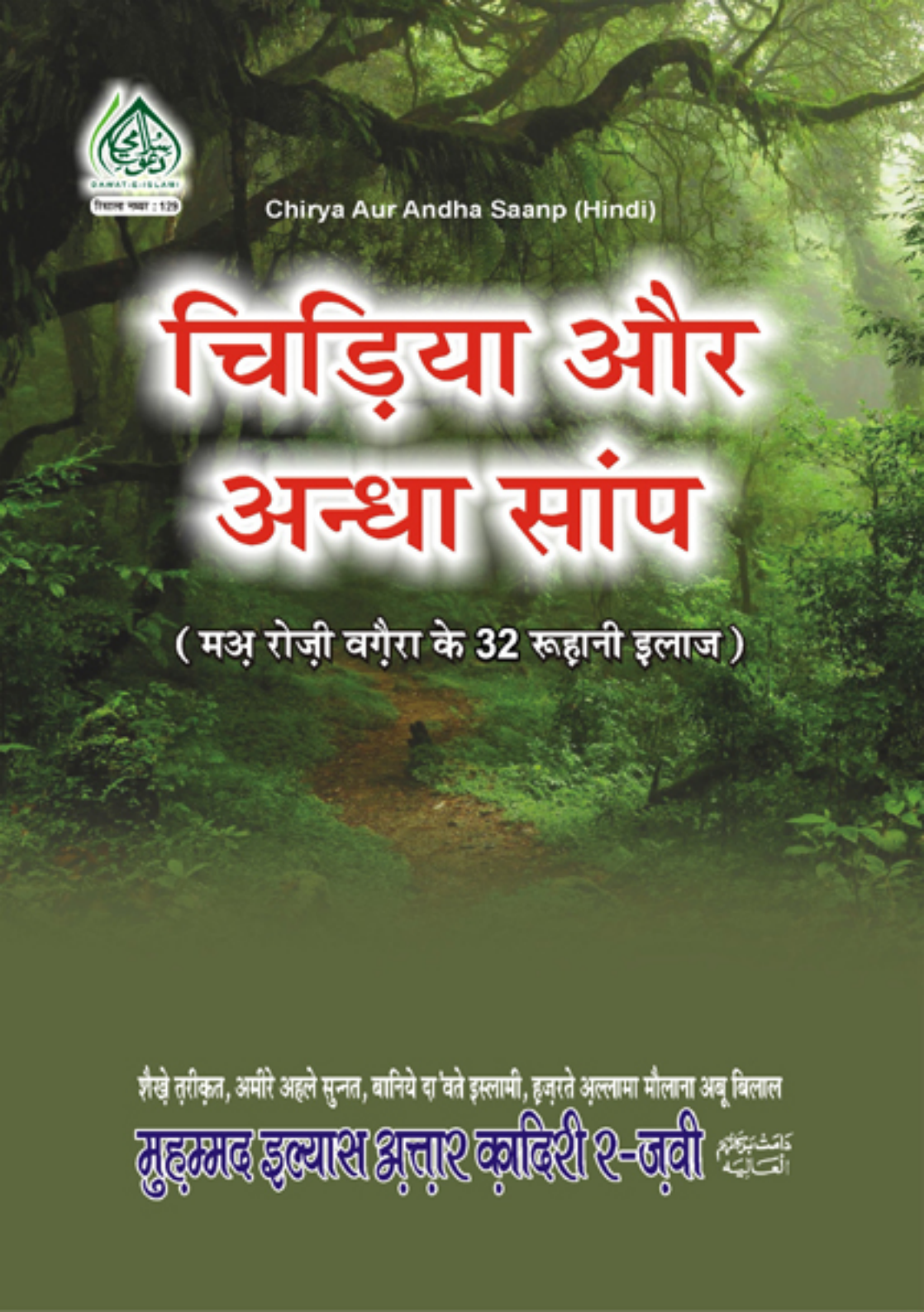

रिसाला नम्बर : 129

Chirya Aur Andha Saanp (Hindi)

चिड़िया और अन्धा सांप

(मअ़ रोज़ी वग़ैरा के 32 रूहानी इलाज)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

चिड़िया और अन्धा सांप

येह रिसाला (**चिड़िया और अन्धा सांप**)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की
मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

चिड़िया और अन्धा सांप

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (33 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हर ह़ाल में ''राज़ी ब रिज़ा'' रहने का जज़्बा बढ़ेगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : जिसे कोई मुश्किल पेश आए उसे मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ना चाहिये क्यूं कि मुझ पर दुरूद पढ़ना मुसीबतों और बलाओं को टालने वाला है। (اَلْقَوْلُ الْبَدِيع ص ٤١٤،بستان الواعظين للجوزى ص٢٧٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

चिड़िया और अन्धा सांप

डाकूओं का एक गुरौह डकैती के लिये ऐसे मक़ाम पर पहुंचा जहां खजूर के तीन दरख़्त थे एक दरख़्त उन में ख़ुश्क (या'नी बिग़ैर खजूरों के) था। डाकूओं के सरदार का बयान है : मैं ने देखा कि एक **चिड़िया** फलदार दरख़्त से उड़ कर ख़ुश्क दरख़्त पर जा बैठती है और थोड़ी देर बा'द उड़ कर फलदार दरख़्त पर आती है फिर वहां से उड़ कर दोबारा उसी ख़ुश्क दरख़्त पर आ जाती है। इसी त़रह़ उस ने बहुत सारे चक्कर लगाए। मैं त़अ़ज्जुब के मारे ख़ुश्क दरख़्त पर चढ़ा तो क्या देखता हूं कि वहां एक **अन्धा सांप** मुंह खोले बैठा है और **चिड़िया** उस के मुंह में खजूर

www.dawateislami.net

रख जाती है। येह देख कर मैं रो पड़ा और **अल्लाह तआ़ला** की बारगाह में अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या इलाही ! एक त़रफ़ येह सांप है जिस को मारने का हुक्म तेरे नबिय्ये मोह़तरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दिया है, मगर जब तूने इस की आंखें ले लीं तो इस के गुज़ारे के लिये एक **चिड़िया** मुक़र्रर फ़रमा दी, दूसरी त़रफ़ मैं तेरा मुसल्मान बन्दा होने के बा वुजूद मुसाफ़िरों को डरा धम्का कर लूट लेता हूं। उसी वक़्त ग़ैब से एक आवाज़ गूंज उठी : ऐ फ़ुलां ! तौबा के लिये मेरा दरवाज़ा खुला है। येह सुन कर मैं ने अपनी तलवार तोड़ डाली और कहने लगा : "मैं अपने गुनाहों से बाज़ आया, मैं अपने गुनाहों से बाज़ आया।" फिर वोही ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी : "हम ने तुम्हारी तौबा क़बूल कर ली है।" जब अपने रु-फ़क़ा के पास आ कर मैं ने माजरा कहा तो वोह कहने लगे : हम भी अपने प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुल्ह़ करते हैं। चुनान्चे उन्हों ने भी सच्चे दिल से तौबा की और सारे ह़ज के इरादे से **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की जानिब चल पड़े। तीन दिन सफ़र करते हुए एक गाउं में पहुंचे, तो वहां एक **नाबीना बुढ़िया** देखी जो मेरा नाम ले कर पूछने लगी कि क्या इस क़ाफ़िले में वोह भी है ? मैं ने आगे बढ़ कर कहा : जी हां वोह मैं ही हूं कहो क्या बात है ? बुढ़िया उठी और घर के अन्दर से कपड़े निकाल लाई और कहने लगी : चन्द रोज़ हुए मेरा नेक फ़रज़न्द इन्तिक़ाल कर गया है, येह उसी के कपड़े हैं, मुझे तीन रात मु-तवातिर सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर तुम्हारा नाम ले कर इर्शाद फ़रमाया है कि "वोह आ रहा है, येह कपड़े उसे दे देना।" मैं ने

www.dawateislami.net

उस से वोह मुबारक कपड़े लिये और पहन कर अपने रु-फ़क़ा समेत **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की त़रफ़ रवाना हो गया । (رَوْضُ الرَّياحِين ص۲۳۲) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

वाह मेरे मौला तेरी भी क्या शान है ! तूने चिड़िया को अन्धे सांप की ख़ादिमा बना दिया ! तेरे रिज़्क़ फ़राहम करने के अन्दाज़ भी क्या ख़ूब हैं !

अल्लाह तआ़ला ने रोज़ी का ज़िम्मा लिया है

बे रोज़गारी और रोज़ी की तंगी पर घबराने वालो ! शैत़ान के वस्वसों में न आओ ! बारहवें पारे की पहली आयत में इर्शादे ख़ुदा वन्दी है :

وَمَامِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़ **अल्लाह** के ज़िम्मए करम पर न हो ।

इस आयते करीमा के तह़्त **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان "नूरुल इ़रफ़ान" में फ़रमाते हैं : ज़मीन पर चलने वाले का इस लिये ज़िक्र फ़रमाया कि हम को इन्हीं का मुशा-हदा होता (या'नी देखना मिलता) है, वरना जिन्नात, मलाएका वग़ैरा सब को रब عَزَّوَجَلَّ रोज़ी देता है । उस की **रज़्ज़ाक़िय्यत** (या'नी रिज़्क़ देने की सिफ़त) सिर्फ़ ह़ैवानों में मुन्ह़सर (या'नी मौक़ूफ़) नहीं, जो

www.dawateislami.net

जिस रोज़ी के लाइक़ है उस को वोही मिलती है । बच्चे को मां के पेट में और क़िस्म की रोज़ी मिलती है और पैदाइश के बा'द दांत निकलने से पहले और त़रह़ की, बड़े हो कर और त़रह़ की, ग़-रज़े कि دَآبَّة (या'नी ज़मीन पर चलने वाला) में भी उ़मूम (या'नी हर कोई शामिल) है और रिज़्क़ में भी । (नूरुल इरफ़ान, स. 353, ब तग़य्युरे क़लील)

ग़रीबों के मज़े हो गए (ह़िकायत)

बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में एक बार फ़ु-क़रा सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अपना क़ासिद (या'नी नुमायन्दा) भेजा जिस ने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर अ़र्ज़ की : मैं **फ़ु-क़रा** (या'नी ग़रीबों) का नुमायन्दा बन कर ह़ाज़िर हुवा हूं। **मुस्त़फ़ा** जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हें भी **मरह़बा** और उन्हें भी जिन के पास से तुम आए हो ! तुम ऐसे लोगों के पास से आए हो जिन से मैं मह़ब्बत करता हूं ।" **क़ासिद** ने अ़र्ज़ की : **"या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! फ़ु-क़रा (या'नी ग़रीबों) ने येह गुज़ारिश की है कि मालदार ह़ज़रात जन्नत के द-रजात ले गए ! वोह **ह़ज** करते हैं और हमें इस की इस्तित़ाअ़त (या'नी त़ाक़त व क़ुदरत) नहीं, वोह **उ़मरह** करते हैं और हम इस पर क़ादिर नहीं, वोह बीमार होते हैं तो अपना ज़ाइद माल **स-दक़ा** कर के आख़िरत के लिये जम्अ़ कर लेते हैं ।" **आप** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरी त़रफ़ से **फ़ु-क़रा** को पैग़ाम दो कि इन में से जो (अपनी ग़ुरबत पर) सब्र करे और सवाब की उम्मीद रखे उसे तीन ऐसी बातें मिलेंगी जो मालदारों को ह़ासिल नहीं : ﴿1﴾ जन्नत में ऐसे बालाख़ाने (या'नी बुलन्द मह़ल्लात) हैं

www.dawateislami.net

जिन की त़रफ़ अहले जन्नत ऐसे देखेंगे जैसे दुन्या वाले आस्मान के सितारों को देखते हैं, उन में सिर्फ़ **फ़क़्र** (या'नी ग़ुरबत) इख़्तियार करने वाले नबी, शहीद फ़क़ीर और फ़क़ीर मोमिन दाख़िल होंगे ﴿2﴾ फ़ु-क़रा मालदारों से क़ियामत के आधे दिन की मिक़्दार या'नी 500 साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे ﴿3﴾ मालदार शख़्स سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَر कहे और येही कलिमात फ़क़ीर भी अदा करे तो फ़क़ीर के बराबर सवाब मालदार नहीं पा सकता, अगर्चे वोह 10 हज़ार दिरहम (भी साथ में) स-दक़ा करे। दीगर तमाम नेक आ'माल में भी येही मुआ़-मला है।'' **क़ासिद** ने वापस जा कर फ़ु-क़रा (या'नी ग़रीबों) को येह फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनाया तो उन्हों ने कहा : हम राज़ी हैं, हम राज़ी हैं।

(एह्याउल उ़लूम, जि. 4, स. 596, 597, मक-त-बतुल मदीना, ब ह़वाला क़ूतुल क़ुलूब, जि. 1, स. 436)

मैं बड़ा अमीरो कबीर हूं, शहे दो सरा का असीर हूं
दरे मुस्त़फ़ा का फ़क़ीर हूं, मेरा रिफ़्अ़तों पे नसीब है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़क़्र की ता'रीफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़क़ीरों के तो दुन्या व आख़िरत में वारे ही न्यारे हैं ! याद रहे ! फ़क़ीर वोही अच्छा है ! जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर **राज़ी** रहते हुए सब्रो क़नाअ़त इख़्तियार करे और गिले शिक्वे से बचा रहे। याद रहे ! यहां फ़क़ीरों से मुराद भिकारी नहीं हैं फ़क़्र की ता'रीफ़ येह है कि ''जिस शै की ह़ाजत है वोह मौजूद न हो।'' जिस

www.dawateislami.net

चीज़ की ज़रूरत ही नहीं अगर वोह न पाई जाए तो उसे ''फ़क़्र'' नहीं कहा जाता नीज़ जिस शख़्स के पास मत़लूबा शै मौजूद भी हो और उस के क़ाबू में भी हो तो ऐसा शख़्स **फ़क़ीर** नहीं कहलाता ।

(اِحیاءُ الْعُلوم ج٤ ص ٥٦٢)

''फ़क़ीरे मदीना'' के नव हुरूफ़ की निस्बत से फ़क़्र की फ़ज़ीलत पर 9 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ ''उस शख़्स के लिये ख़ुश ख़बरी है जिसे इस्लाम की त़रफ़ हिदायत ह़ासिल है, उस की रोज़ी ब क़दरे किफ़ायत है और वोह उस पर **क़नाअ़त** करता है ।'' (ترمذی ج٤ ص ١٥٦ حدیث ٢٣٥٦) **क़नाअ़त** की ता'रीफ़ आगे आ रही है ।

﴾2﴿ ऐ फ़ु-क़रा के गुरौह ! दिल से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तक़्सीम पर राज़ी रहोगे तो अपने **फ़क़्र** का सवाब पाओगे वरना नहीं ।

(اَلْفِرْدَوْس بمأثور الْخَطّاب ج٥ ص٢٩١ حدیث٨٢١٦)

﴾3﴿ हर चीज़ की एक चाबी होती है और जन्नत की चाबी मसाकीन और फ़ु-क़रा से इन के **सब्र** की वज्ह से मह़ब्बत करना है, येह लोग क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब में होंगे । (ایضاً ج٣ص ٣٣٠ حدیث٤٩٩٣)

﴾4﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से पसन्दीदा बन्दा वोह फ़क़ीर है जो अपनी रोज़ी पर **क़नाअ़त** इख़्तियार करते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से **राज़ी** रहे ।

(قُوتُ الْقُلوب ص ٣٢٦)

﴾5﴿ ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! आले मुह़म्मद को ब क़दरे किफ़ायत रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा । (مُسلِم ص١٥٨٨ حدیث ١٠٥٥)

www.dawateislami.net

《6》 फ़क़ीर अगर **राज़ी** (ब रिज़ाए इलाही) हो तो उस से अफ़्ज़ल कोई नहीं।

(قُوتُ الْقُلوب ص ٣٢٦)

《7》 फ़क़्र दुन्या में मोमिन का तोह़फ़ा है। (اَلْفِرْدَوْس بمأثور الْخَطّاب ج٢ ص٧٠ حديث:٢٣٩٩)

《8》 क़ियामत के दिन हर शख़्स चाहे अमीर हो या ग़रीब, इस बात की तमन्ना करेगा कि काश ! उसे दुन्या में सिर्फ़ ब क़दरे किफ़ायत रोज़ी दी जाती। (ابن ماجه ج٤ ص٤٤٢ حديث٤١٤٠)

《9》 मेरी उम्मत के फ़ु-क़रा अमीरों से 500 साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे। [ترمذی ج٤ ص١٥٨ حدیث ٢٣٦٠] (एहूयाउल उ़लूम, जि. 4, स. 588 ता 590, 572, मक-त-बतुल मदीना)

दौलते दुन्या से बे रग़बत मुझे कर दीजिये

मेरी ह़ाजत से मुझे ज़ाइद न करना मालदार

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 218)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

''राज़ी'' की ता'रीफ़

न तो माल में ऐसी रग़बत हो कि माल मिलने पर ख़ुशी मह़सूस हो और न ही ऐसी नफ़रत हो कि माल के मिलने पर तक्लीफ़ हो और उसे लेने से इन्कार कर दे। ऐसी ह़ालत वाले शख़्स को **राज़ी** कहा जाता है।

(احياءُ الْعُلوم ج٤ ص ٥٦٣)

क़नाअ़त का लुग़वी मा'ना : इक्तिफ़ा करना (या'नी काफ़ी समझना)। सब्र करना। थोड़ी चीज़ पर राज़ी और ख़ुश रहना, जो मिले उसी में गुज़ारा करना, ज़ियादा त़-लबी और ह़िर्स से बचे रहना **क़नाअ़त** कहलाता है। (फ़रहंगे आसिफ़िय्या, जि. 3, स. 400)

www.dawateislami.net

क़नाअ़त की दो ता'रीफ़ात ﴿1﴾ ख़ुदा की तक़्सीम पर राज़ी रहना **क़नाअ़त** कहलाता है । (التعریفات لِلجُرجانی ص ١٢٦)

﴿2﴾ जो कुछ हो उसी पर इक्तिफ़ा करना **क़नाअ़त** है ।

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त जब किसी से महब्बत फ़रमाता है तो....

जिस के घर वाले बिछड़ जाएं, अकेला रह जाए, कंगाल और बेहाल हो जाए उसे भी रब्बे जुल जलाल عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहते हुए **सब्र, सब्र** और सिर्फ़ **सब्र** करना चाहिये, और ख़ुदाए मजीद عَزَّوَجَلَّ से उम्मीद रखनी चाहिये कि वोह इसे अपने प्यारे बन्दों में शामिल फ़रमा ले । चुनान्चे नबिय्ये अकरम, शाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब किसी बन्दे से महब्बत फ़रमाता है तो उसे **आज़्माइश** में मुब्तला फ़रमाता है और जब उस से ज़ियादा महब्बत फ़रमाता है तो उसे ''चुन'' लेता है। अ़र्ज़ की गई : ''चुनने'' से क्या मुराद है ? इर्शाद फ़रमाया : ''उस के लिये न अहलो इ़याल (या'नी बाल बच्चे, घर के अफ़राद) छोड़ता है न **माल** ।''

(اِحیاءُ الْعُلوم ج ٤ ص ٥٧٨)

वोह इ़श्क़े ह़क़ीक़ी की लज़्ज़त नहीं पा सकता
जो रन्जो मुसीबत से दोचार नहीं होता

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 164)

उस के सर के नीचे पथ्थर का तक्या था (ह़िकायत)

प्यारे प्यारे ग़रीबो ! सच पूछो तो ग़ुरबत भी बहुत बड़ी ने'मत है जब कि **सब्रो** रिज़ा की सआ़दत भी साथ मिले क्यूं कि ग़रीब व

www.dawateislami.net

मिस्कीन मगर साबिरो शाकिर बन्दे पर **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त की कामिल (या'नी पूरी) नज़रे रह़मत होती है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का गुज़र एक ऐसे शख़्स के पास से हुवा जो **पथ्थर को तक्या** बनाए, चादर ओढ़े, ज़मीन पर सो रहा था, उस का चेहरा और दाढ़ी गर्द आलूद थे। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरा येह बन्दा दुन्या में ज़ाएअ़ हो गया है।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह्य फ़रमाई : "**ऐ मूसा !** क्या आप नहीं जानते कि जब मैं अपने बन्दे की त़रफ़ कामिल (या'नी पूरी) त़ौर पर नज़रे रह़मत करता हूं तो दुन्या को उस से मुकम्मल त़ौर पर दूर कर देता हूं।" (اِحیاءُ الْعُلوم ج ٤ ص ٥٧٨)

फ़क़्र आक़ा की मह़ब्बत की सौग़ात है (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुग़फ़्फ़ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा रह़मत में अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ख़ुदा की क़सम ! मैं आप से **मह़ब्बत** करता हूं।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : देख लो क्या कह रहे हो ! अ़र्ज़ की : ख़ुदा की क़सम ! मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से **मह़ब्बत** करता हूं। उस ने तीन मर्तबा इसी त़रह़ कहा। इस पर मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर तू मुझ से **मह़ब्बत** करता है तो फ़क़्र के लिये पहनावा (या'नी लिबास) तय्यार कर ले, क्यूं कि जो मुझ से **मह़ब्बत** करता है, उस की त़रफ़ फ़क़्र इस से भी ज़ियादा तेज़ी से आता है जिस त़रह़ सैलाब उस जगह की त़रफ़ जाता है जहां उसे ख़त्म होना होता है।" (ترمذی ج ٤ ص ١٥٦ حدیث ٢٣٥٧)

www.dawateislami.net

दौलते इ़श्क़ से दिल ग़नी है, मेरी क़िस्मत है रश्के सिकन्दर
मिद्हते मुस्त़फ़ा की बदौलत, मिल गया है मुझे येह ख़ज़ीना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हज़ार साल की इ़बादत से अफ़्ज़ल अ़मल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : जिस (जाइज़) ख़्वाहिश के पूरा करने पर क़ुदरत ह़ासिल न हो उस से मह़रूमी पर ह़सरत से फ़क़ीर की निकलने वाली आह **मालदार की हज़ार साल की इ़बादत** से अफ़्ज़ल है। (اِحیاءُ الْعُلوم ج٤ ص ٦٠٢)

एक हज़ार दीनार स-दक़ा करने से अफ़्ज़ल अ़मल

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्हाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो शख़्स बाज़ार जाए और किसी चीज़ को देख कर उसे ख़रीदने की दिल में ख़्वाहिश पैदा हो लेकिन सवाब की उम्मीद पर वोह **सब्र** करे तो उस के लिये येह अ़मल राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में **एक हज़ार दीनार स-दक़ा** करने से अफ़्ज़ल है। (اِحیاءُ الْعُلوم ج ٤ ص ٦٠٢)

तुम्हारी दुआ़ मेरी दुआ़ से अफ़्ज़ल है (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्र बिन ह़ारिस ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی की ख़िदमत में किसी ने अ़र्ज़ की, कि मेरे लिये दुआ़ फ़रमाइये क्यूं कि मैं अहलो इ़याल के अख़्राजात की वज्ह से परेशान हूं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "जब घर वाले तुम से कहें कि हमारे पास न तो आटा है और न ही रोटी तो उस वक़्त तुम मेरे लिये दुआ़ करना क्यूं कि तुम्हारी उस वक़्त की दुआ़ मेरी दुआ़ से अफ़्ज़ल है।" (اَیضاً)

www.dawateislami.net

दुख्यारों की दुआ क़बूल होती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़ाहिर है कि जो सख़्त तंगदस्ती का शिकार होगा वोह दुखी और ग़मगीन भी होगा और दुख्यारों की दुआ क़बूल होती है जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 318 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''फ़ज़ाइले दुआ़''** सफ़ह़ा 218 पर जिन लोगों की दुआ़एं क़बूल होती हैं उन में सब से पहले नम्बर पर लिखा है, अव्वल : **मुज़्त़र** (या'नी दुख्यारा)। इस केह़ाशिये में सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : इस (या'नी दुख्यारे और नाचार व नाशाद (या'नी ग़मज़दा) की दुआ़ की क़बूलिय्यत) की त़रफ़ तो ख़ुद क़ुरआने करीम में इर्शाद मौजूद है :

اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ (پ۲۰ النمل ۶۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : या वोह जो लाचार की सुनता है, जब उसे पुकारे और दूर कर देता है बुराई।

ग़रीब शहज़ादे पर आ'ला ह़ज़रत की इन्फ़िरादी कोशिश

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक साह़िब सादाते किराम से अक्सर मेरे पास तशरीफ़ लाते और ग़ुरबतो इफ़्लास के शाकी रहते (या'नी शिकायत करते)। एक मर्तबा बहुत परेशान आए, मैं ने उन से दरयाफ़्त किया कि जिस औ़रत को बाप ने त़लाक़ दे दी हो क्या वोह बेटे को ह़लाल हो सकती है ? फ़रमाया : ''नहीं।'' मैं ने कहा : ह़ज़रत अमीरुल मुअमिनीन मौला अ़ली (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने जिन की आप

www.dawateislami.net

औलाद में हैं, तन्हाई में अपने चेहरए मुबारक पर हाथ फैर कर इर्शाद फ़रमाया : "ऐ दुन्या ! किसी और को धोका दे मैं ने तुझे वोह त़लाक़ दी जिस में कभी रज्अ़त (या'नी वापसी) नहीं ।" फिर सादाते किराम का इफ़्लास (या'नी तंगी में मुब्तला होना) क्या तअ़ज्जुब की बात है ! सय्यिद साहिब ने फ़रमाया : "**वल्लाह !** मेरी **तस्कीन** हो गई ।" वोह अब ज़िन्दा मौजूद हैं उस रोज़ से **कभी शाकी न हुए ।** (या'नी तंगदस्ती की शिकायत नहीं की) (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 127 ता 128)

ह़ाजत छुपाने की फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दूसरों को ख़्वाह म ख़्वाह अपने दुखड़े सुनाने से परेशानी तो दूर होने से रही उल्टा मुसीबत छुपाने और **सब्र** करने के ज़रीए अज्र कमाने का मौक़अ़ ज़ाएअ़ हो जाता है, क्यूं कि किसी एक फ़र्द को भी बिला वज्ह अपना मरज़ या दुख बयान कर दिया या बे सबब अपनी ज़बान, चेहरे या दीगर आ'ज़ा से उस के आगे बेचैनी और बे क़रारी ज़ाहिर की तो सब्र का अज्र जाता रहा । **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 318 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**फ़ज़ाइले दुआ**" सफ़ह़ा 263 पर है : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "भूका और ह़ाजत मन्द अगर अपनी ह़ाजत लोगों से छुपाए, ख़ुदाए तआ़ला रिज़्क़े ह़लाल साल भर तक उसे इनायत करे ।" (شُعَبُ الْاِیمان ج۷ ص۲۱۵ حدیث۱۰۰۵٤)

दो मछली के शिकारी (ह़िकायत)

बे रोज़गारी से तंग आने, तंगदस्ती से घबराने, कारोबार की कमी के बाइ़स ग़म खाने, मालदारों को देख कर अपनी ग़ुरबत पर दिल जलाने

www.dawateislami.net

वाले अपने ग़मगीन दिल को तसल्ली दिलाने के लिये एक ईमान अफ़रोज़ **हिकायत** मुला-हज़ा फ़रमाएं, हज़रते सय्यिदुना **अ़ता** ख़ुरासानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی फ़रमाते हैं : एक **नबी** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام दरिया के कनारे से गुज़रे तो देखा कि एक शख़्स **मछली का शिकार** कर रहा है, उस ने بِسْمِ اللّٰه (या'नी **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ करता हूं) कह कर दरिया में जाल फेंका लेकिन कोई मछली न आई । फिर एक और शिकारी के पास से गुज़रे, उस ने शैत़ान का नाम ले कर जाल डाला तो इतनी ज़ियादा मछलियां निकलीं कि उन का वज़्न करना मुश्किल हो गया । उन **नबी** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! येह तो मा'लूम है कि येह सब तेरी ही त़रफ़ से है लेकिन इस की ह़िक्मत जानना चाहता हूं ।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रिश्तों से इर्शाद फ़रमाया : "मेरे बन्दे को उन दोनों (मछली पकड़ने वालों) का उख़्रवी मक़ाम दिखाओ !" जब उन्हों ने بِسْمِ اللّٰه पढ़ कर जाल डालने वाले को मिलने वाली आख़िरत की इ़ज़्ज़तो अ़-ज़मत और शैत़ान का नाम ले कर जाल डालने वाले को मिलने वाली आख़िरत की रुस्वाई व ज़िल्लत मुला-हज़ा फ़रमाई तो अ़र्ज़ गुज़ार हुए : "ऐ रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ! मैं राज़ी हूं ।" (احیاء العلوم ج ۱ ص ۵۷۷)

जहन्नम में मालदार अफ़राद और औ़रतों की ता'दाद ज़ियादा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने जन्नत में झांका तो वहां ज़ियादा तर **ग़रीब** लोग देखे और दोज़ख़ मुला-हज़ा की तो वहां **मालदारों** और **औ़रतों** को ज़ियादा पाया ।" (مُسندِ اِمام احمد ج ۲ ص ۵۸۲ حدیث ۶۶۲۲) एक रिवायत में है, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : मैं ने पूछा : **मालदार** लोग कहां हैं ? तो

www.dawateislami.net

बताया गया : उन्हें उन की **मालदारी** ने रोक रखा है । (قُوتُ الْقُلوب ج۱ ص ٤٠٤) एक रिवायत में है कि मैं ने दोज़ख़ में **औरतों** की कसरत देख कर सबब पूछा तो बताया गया : इन्हें दो सुर्ख़ चीज़ों या'नी **सोने** और ज़ा'फ़रान (या'नी उन को ज़ेवरात और ख़ास क़िस्म के रंगीन लिबास) ने रोक रखा है ।

(एह्याउल उ़लूम, जि. 4, स. 577, मक-त-बतुल मदीना)

औ़रत के सोने के ज़ेवरात पर भी ज़कात फ़र्ज़ हो सकती है

सोना जम्अ़ करने की शौक़ीन मगर फ़र्ज़ होने के बा वुजूद इस की **ज़कात** न देने वाली इस्लामी बहनों को इस ह़दीसे पाक से दर्स लेते हुए डर जाना चाहिये । याद रहे ! ज़कात फ़र्ज़ होने के लिये कमाना या कमाने के क़ाबिल होना शर्त़ नहीं, बल्कि सोने चांदी के पहनने के ज़ेवरात पर भी शराइत़ पाए जाने की सूरत में ज़कात देनी ज़रूरी है । ह़िर्स के सबब सोना जम्अ़ करने वालियों को दुन्या में कम ही सोना काम आता है, ज़कात न दे कर लालची औ़रतें अ़ज़ाबे आख़िरत का बहुत बड़ा ख़त़रा मोल ले रही हैं ! एक **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़िस्सा है : ''जो शख़्स सोने चांदी का मालिक हो और उस का ह़क़ अदा न करे तो जब क़ियामत का दिन होगा उस के लिये आग के **पत्र** बनाए जाएंगे उन पर जहन्नम की आग भड़काई जाएगी और उन से उस की करवट और पेशानी और पीठ दाग़ी जाएगी, जब ठन्डे होने पर आएंगे फिर वैसे ही कर दिये जाएंगे । येह मुआ़-मला उस दिन का है जिस की मिक़्दार **पचास हज़ार** बरस है यहां तक कि बन्दों के दरमियान फ़ैसला हो जाए, अब वोह अपनी राह देखेगा ख़्वाह जन्नत की त़रफ़ जाए या जहन्नम की त़रफ़ ।''

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 869 ब ह़वाला صحیح مسلم ص۴۹۱ حدیث ۹۸۷)

www.dawateislami.net

घर में मुट्ठी भर आटा नहीं और आप..... (ह़िकायत)

मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक रोज़ अपने अह़बाब (या'नी दोस्तों) में तशरीफ़ फ़रमा थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजए मोह़-त-रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आईं और कहने लगीं : ''आप यहां इन लोगों में तशरीफ़ फ़रमा हैं और ब ख़ुदा घर में मुट्ठी भर भी आटा नहीं ।'' उन्हों ने जवाब दिया : ''येह क्यूं भूलती हो कि हमारे सामने एक दुश्वार गुज़ार **घाटी** है जिस से हलके सामान वालों के सिवा कोई नजात नहीं पाएगा ।'' येह सुन कर वोह ख़ुशी के साथ वापस चली गईं । (رَوْضُ الرَّیاحِین ص٢٤) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शिक्वा नहीं करना चाहिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ किस क़दर **क़नाअ़त** पसन्द थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की अहलियए मोह़-त-रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी कैसी इत़ाअ़त गुज़ार थीं कि घर में खाने के लिये कुछ न होने के बा वुजूद शोहरे नामदार का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से मम्लू (या'नी भरपूर) जुम्ला सुन कर ब त़ीबे ख़ात़िर (या'नी ख़ुशी ख़ुशी) वापस लौट गईं । हमें भी **तंग दस्तियों** और घरेलू **परेशानियों** से घबरा कर **शिक्वा व शिकायत** करने के बजाए हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहना चाहिये ।

www.dawateislami.net

ज़बां पर शिक्वए रन्जो अलम लाया नहीं करते

नबी के नाम लेवा ग़म से घबराया नहीं करते

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तंगदस्ती के "44" अस्बाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ रोज़ी में ब-र-कत की वुजूहात हैं इसी त़रह़ रोज़ी में तंगी के भी कुछ अस्बाब हैं, अगर इन अस्बाब से बचने की तरकीब फ़रमाएंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ रोज़ी की तंगी से हिफ़ाज़त होगी। चुनान्चे **तंगदस्ती के 44 अस्बाब** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : ﴾1﴿ बिग़ैर हाथ धोए खाना खाना ﴾2﴿ नंगे सर खाना ﴾3﴿ अंधेरे में खाना खाना ﴾4﴿ दरवाज़े पर बैठ कर खाना ﴾5﴿ मय्यित के क़रीब बैठ कर खाना ﴾6﴿ जनाबत की ह़ालत में (या'नी एह़तिलाम वग़ैरा के बा'द ग़ुस्ल से क़ब्ल) खाना खाना ﴾7﴿ चारपाई पर बिग़ैर दस्तर ख़्वान बिछाए खाना ﴾8﴿ दस्तर ख़्वान पर निकला हुवा खाना खाने में देर करना ﴾9﴿ चारपाई पर ख़ुद सिरहाने (या'नी सर रखने की जगह) बैठना और खाना पाइंती (या'नी जिस त़रफ़ पाउं किये जाते हैं उस ह़िस्से) की जानिब रखना ﴾10﴿ दांतों से रोटी कुतरना (बर्गर वग़ैरा खाने वाले भी एह़तियात़ फ़रमाएं तो अच्छा) ﴾11﴿ चीनी या मिट्टी के टूटे हुए बरतन इस्ति'माल में रखना ख़्वाह उस में पानी पीना (बरतन या कप के टूटे हुए ह़िस्से की त़रफ़ से पानी, चाय वग़ैरा पीना मक्रूहे तन्ज़ीही है, मिट्टी के दराड़ वाले या ऐसे बरतन जिन के अन्दरूनी ह़िस्से से थोड़ी सी भी मिट्टी उखड़ी हुई हो उस में खाना खाने से बचना मुनासिब कि ऐसी जगहों में मैल कुचैल जम्अ़ होता है और वहां जरासीम पैदा हो कर पेट में जा कर बीमारियों का सबब बन सकते हैं) ﴾12﴿ खाए हुए बरतन साफ़ न करना। ह़दीसे पाक में है : खाने के बा'द

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे। (طبرانی)

जो शख़्स **बरतन** चाटता है तो वोह बरतन उस के लिये दुआ़ करता है और कहता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे जहन्नम की आग से **आज़ाद** करे जिस त़रह़ तू ने मुझे **शैत़ान** से आज़ाद किया। **(جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّیُوطی ج۱ ص۳۴۷ حدیث ۲۰۰۸)** और एक रिवायत में है कि बरतन उस के लिये **इस्तिग़फ़ार** (या'नी मग़्फ़िरत की दुआ़) करता है। **(ابن ماجہ ج٤ ص١٤ حدیث ٣٢٧١)** **《13》** जिस बरतन में खाना खाया उसी में हाथ धोना **《14》** ख़िलाल करते वक़्त दांतों से निकले हुए रेशे व ज़र्रात वग़ैरा फिर मुंह में रख लेना **《15》** खाने पीने के बरतन खुले छोड़ देना **《16》** रोटी को इधर उधर इस त़रह़ डाल देना कि बे अ-दबी हो और पाउं में आए। (मुलख़्ख़स अज़ : सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, स. 600 ता 605)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुरहानुद्दीन ज़रनूजी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने तंगदस्ती के जो अस्बाब बयान फ़रमाए हैं उन में येह भी हैं : **《17》** ज़ियादा सोने की आ़दत (इस से ह़ाफ़िज़ा कमज़ोर होता और जहालत बढ़ती है) **《18》** नंगे सोना **《19》** बे ह़याई के साथ पेशाब करना (आ़म रास्तों पर बिला तकल्लुफ़ पेशाब करने वाले ग़ौर फ़रमाएं) **《20》** दस्तर ख़्वान पर गिरे हुए दाने और खाने के ज़र्रे वग़ैरा उठाने में सुस्ती करना **《21》** पियाज़ और लह्सन के छिलके जलाना **《22》** घर में रुमाल से झाडू निकालना **《23》** रात को झाडू देना **《24》** कूड़ा घर ही में छोड़ देना **《25》** मशाइख़ के आगे चलना **《26》** वालिदैन को उन के नाम से पुकारना **《27》** हाथों को गारे या मिट्टी से धोना **《28》** दरवाज़े के एक ह़िस्से से टेक लगा कर खड़े होना **《29》** बैतुल ख़ला (Wash room) में वुज़ू करना (घरों में आज कल अटेच बाथ होने की वज्ह से येह आ़म है, मुम्किन हो तो घर में अलग से वुज़ू का इन्तिज़ाम करना चाहिये) **《30》** बदन ही पर कपड़ा वग़ैरा सी लेना **《31》** पहने हुए लिबास से चेहरा ख़ुश्क कर

www.dawateislami.net

लेना ﴾**32**﴿ घर में मकड़ी के जाले लगे रहने देना ﴾**33**﴿ नमाज़ में सुस्ती करना ﴾**34**﴿ नमाज़े फ़ज्र के बा'द मस्जिद से जल्दी निकल जाना ﴾**35**﴿ सुब्ह़ सवेरे बाज़ार पहुंच जाना ﴾**36**﴿ देर गए बाज़ार से आना ﴾**37**﴿ अपनी औलाद को "कोसनें" (या'नी बद-दुआ़एं) देना (अक्सर औ़रतें बात बात पर अपने बच्चों को बद-दुआ़एं देती हैं और फिर **तंगदस्ती** के रोने भी रोती हैं) ﴾**38**﴿ गुनाह करना ख़ुसूसन झूट बोलना ﴾**39**﴿ चराग़ (या मोमबत्ती) को फूंक मार कर बुझा देना ﴾**40**﴿ टूटी हुई कंघी इस्ति'माल करना ﴾**41**﴿ मां बाप के लिये दुआ़ए ख़ैर न करना ﴾**42**﴿ इ़मामा बैठ कर बांधना और ﴾**43**﴿ पाजामा या शलवार खड़े खड़े पहनना ﴾**44**﴿ नेक आ'माल में टालम टोल करना। (تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّم ص ١٢٣ تا ١٢٦)

(صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد)

तंगदस्ती से नजात

बा'ज़ आ'माल ऐसे भी होते हैं जिन के बजा लाने से **तंगदस्ती** दूर होती है, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से रिवायत है कि **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : खाने से पहले और बा'द में वुज़ू करना (या'नी दोनों हाथ गिट्टों तक धोना) मोह़ताजी (तंगदस्ती) दूर करता है और येह मुर-सलीन (या'नी रसूलों) عَلَيْهِ السَّلَام की सुन्नतों में से है। (مُعْجَم اَوْسَط ج٥ ص٢٣١ حديث٧١٦٦)

तंगदस्ती का इलाज

ज़बर दस्त मुह़द्दिस ह़ज़रते सय्यिदुना हुदबा बिन ख़ालिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَاجِد को ख़लीफ़ए बग़दाद मामून रशीद ने अपने हां मद्ऊ़ किया, त़आ़म (या'नी खाने) के आख़िर में खाने के जो दाने वग़ैरा गिर गए

www.dawateislami.net

थे, मुहद्दिस साहिब चुन चुन कर तनावुल फ़रमाने (या'नी खाने) लगे । मामून ने हैरान हो कर कहा : ऐ शैख़ ! क्या आप का अभी तक पेट नहीं भरा ? फ़रमाया : क्यूं नहीं ! दर अस्ल बात येह है कि मुझ से हज़रते सय्यिदुना हम्माद बिन स-लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक हदीस बयान फ़रमाई है : "जो शख़्स दस्तर ख़्वान के नीचे गिरे हुए टुकड़ों को खाएगा वोह फ़क़्र (या'नी तंगदस्ती) से बे ख़ौफ़ हो जाएगा ।" **(تاریخ اصبهان للاصبهانی ج۲ص۳۳۳)**

रोज़ी में ब-र-कत का बेहतरीन नुस्ख़ा

हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि एक शख़्स ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में हाज़िर हो कर अपनी **तंगदस्ती** की शिकायत की । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तुम घर में दाख़िल होने लगो और घर में कोई हो तो **सलाम** कर के दाख़िल हुवा करो और अगर घर में कोई न हो तो **मुझ पर सलाम** अ़र्ज़ करो और एक बार قُلْ هُوَ اللّٰه शरीफ़ पढ़ो ।" उस शख़्स ने ऐसा ही किया फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस को इतना मालामाल कर दिया कि उस ने अपने हमसायों (या'नी पड़ोसियों) की भी ख़िदमत की । **(تفسیر قرطبی ج۱۰ص۱۸۳)**

ख़ाली घर में सलाम पेश करने का त़रीक़ा

ख़ाली घर में सलाम करने के दो त़रीक़े पेश किये जाते हैं : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले, "**101 म-दनी फूल**" सफ़ह़ा 24 पर है : अगर ऐसे मकान (ख़्वाह अपने ख़ाली घर) में जाना हो कि उस में कोई न हो तो येह कहिये : اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْن (या'नी हम पर और

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों पर सलाम) फ़िरिश्ते उस सलाम का जवाब देंगे । (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص ٦٨٢) या इस त़रह़ कहिये : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ (या'नी या नबी आप पर सलाम) क्यूं कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़े मुबारक मुसल्मानों के घरों में तशरीफ़ फ़रमा होती है ।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 96, (شرح الشّفاء للقاری ج۲ص۱۱۸

ऐ मदीने के ताजदार सलाम ऐ ग़रीबों के ग़म गुसार सलाम
मेरे प्यारे पे मेरे आक़ा पर मेरी जानिब से लाख बार सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क्या मालदार होना बुरा है ?

हर मालदार बुरा नहीं होता और हर ग़रीब अच्छा नहीं होता । अगर किसी मालदार का दिल माल की मह़ब्बत से ख़ाली हो, उस का माल उस को रब्बे जुल जलाल से ग़ाफ़िल न करे और वोह अपने माल के तमाम शर-ई हुक़ूक़ भी बजा लाता हो तो यक़ीनन वोह एक अच्छा मुसल्मान है, लेकिन किसी दौलत मन्द का ऐसा होना निहायत मुश्किल है । दौलत मन्दों के पास ग़रीबों के मुक़ाबले में उ़मूमन गुनाहों के अस्बाब ज़ियादा होते हैं । जिस के पास गुनाहों के अस्बाब ज़ियादा हों उस का गुनाहों से बचना ज़ियादा दुश्वार होता है । नीज़ दुन्या में जिस के पास माल ज़ियादा उस पर आख़िरत में ह़िसाब का वबाल भी ज़ियादा । चुनान्चे

ह़लाल माल की कसरत से कतराना (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं तो इस बात को भी पसन्द नहीं करता कि मस्जिद के दरवाज़े ही पर मेरी दुकान हो, ताकि कारोबार मुझे नमाज़ और **ज़िक्रुल्लाह** से ग़ाफ़िल न करे नीज़

www.dawateislami.net

साथ ही साथ येह भी ना पसन्द है कि मुझे उस दुकान से रोज़ाना 50 दीनार (या'नी 50 सोने की अश्रफ़ियों) का नफ़्अ़ भी ह़ासिल हो रहा हो जिसे मैं राहे ख़ुदा में स-दक़ा कर दिया करूं ! अ़र्ज़ की गई : आप इस बात (या'नी इस क़दर आसान, ह़लाल और नेकियों भरी कसीर कमाई) को क्यूं ना पसन्द फ़रमाते हैं ? फ़रमाया : **''आख़िरत के ह़िसाब किताब की सख़्ती की वज्ह से ।''** (اِحیاءُ العُلوم ج٤ ص٦٠٣) क्यूं कि आख़िरत का ह़िसाब ह़लाल माल पर भी है और जो ह़राम माल है उस पर तो अ़ज़ाब है ।

सदक़ा प्यारे की ह़या का कि न ले मुझ से ह़िसाब
बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 171, मक-त-बतुल मदीना)

''झूटा जहन्नमी होता है'' के सोलह ह़ुरूफ़ की निस्बत से मालदारों के झूट की 16 मिसालें

आज कल मालदारी के सबब बे शुमार गुनाह किये जा रहे हैं, इन्हीं गुनाहों में येह भी है कि बा'ज़ मालदार कई मवाक़ेअ़ पर माल के तअ़ल्लुक़ से **झूट** बोलते सुनाई देते हैं : इस की **16** मिसालें मुला-ह़ज़ा हों लेकिन किसी बात को **गुनाह भरा झूट** उसी सूरत में कहा जाएगा जब कि वोह बात **सच की उलट** हो और जान बूझ कर कही गई हो और उस में शर-ई इजाज़त व रुख़्सत की भी कोई सूरत न हो म-सलन ﴾**1**﴿ मुझे माल से कोई मह़ब्बत नहीं ﴾**2**﴿ मैं तो सिर्फ़ बच्चों के लिये कमाता हूं ﴾**3**﴿ मैं तो सिर्फ़ इस लिये कमाता हूं कि हर साल मदीने जा सकूं ﴾**4**﴿ मैं तो राहे ख़ुदा में लुटाने के लिये कमाता हूं (ह़ालां कि सालाना फ़क़त ढाई फ़ीसद ज़कात निकालने को भी जी नहीं चाहता, ग़रीबों को ख़ूब धक्के

www.dawateislami.net

खिलाए जा रहे होते हैं) ﴾5﴿ चोरी होने, डाका पड़ने, आतश ज़-दगी या किसी भी सबब से माली नुक़्सान हो जाने पर कहना : "मुझे इस का कोई ग़म नहीं" (ह़ालां कि वावेला भी जारी होता है) ﴾6﴿ शानदार कोठी (बंगला) बना कर या नए मॉडल की बेहतरीन कार ह़ासिल करने के बा'द कहना : "यार ! अपना क्या है ! येह तो बस बच्चों का शौक़ पूरा किया है।" (ह़ालां कि ख़ुद अपना दिल ख़ूब आसाइश पसन्द होता है) ﴾7﴿ इतना कमा लिया है कि बस अब जी भर गया है (ह़ालां कि कहने वाला बड़े जज़्बे के साथ कमाने का सिल्सिला जारी रखता और नए नए कारोबार शुरूअ़ किये जा रहा होता है) ﴾8﴿ मैं बिल्कुल फ़ुज़ूल ख़र्ची नहीं करता (जब कि जीने का अन्दाज़ कुछ और ही दास्तान सुना रहा होता है !) ﴾9﴿ **अल्लाह** ने बहुत कुछ दिया है लेकिन हम सा-दगी पसन्द हैं (ह़ालां कि तन के कपड़े, खाने के बरतन वग़ैरा ब बांगे दुहुल "सा-दगी" का मुंह चिड़ा रहे होते हैं) ﴾10﴿ मैं ने अपनी बेटी या बेटे की शादी बहुत सा-दगी से की है (ह़ालां कि जितना शाही ख़र्च उस शादी पर हुवा होता है उस रक़म में ग़रीब घराने की शायद 100 शादियां हो जाएं) ﴾11﴿ बस जी ! सब कुछ बच्चों के ह़वाले कर दिया है, कारोबार से अपना कोई लेना देना ही नहीं ! (येह बात कहने वाले को कोई उस वक़्त देखे जब येह अपनी औलाद से कारोबार का बा क़ाइदा ह़िसाब ले रहे होते और उन के कान खींच रहे होते हैं) ﴾12﴿ मालदारी की वज्ह से कभी **तकब्बुर** नहीं किया (ऐसा कहने वाले को कोई उस वक़्त देखे जब येह किसी ग़रीब रिश्तेदार को ह़क़ारत से धुत्कार रहे हों, उस से हाथ मिलाना अपनी कस्रे शान क़रार दे रहे हों, या अपने मुलाज़िमीन पर बरस रहे हों) ﴾13﴿ जी चाहता है सब कुछ छोड़ छाड़ कर मदीने जा बसूं (वाक़ेई

www.dawateislami.net

जी चाहता हो तो मरहबा ! वरना झूट) ﴾14﴿ कभी किसी पर अपनी मालादरी का रो'ब नहीं डाला (किसी के यहां शादी बियाह वग़ैरा की तक़रीब में ह़स्बे मन्शा आव भगत न होने की सूरत में उन के मुंह से झड़ने वाले फूलों को कोई देखे या किसी जगह येह अपना तआ़रुफ़ ख़ुद करवाते दिखाई दें कि मा बदौलत इतनी इतनी फ़ेक्टरियों के मालिक हैं वग़ैरा वग़ैरा तो इस जुम्ले की ह़क़ीक़त सामने आ जाएगी) ﴾15﴿ येह मालदारी तो बस ज़ाहिरी है, दिल का तो मैं फ़क़ीर हूं (इन का रूह़ानी सीटी स्केन करें तो शायद ह़िर्स व लालच सरे फ़ेहरिस्त हों) ﴾16﴿ हम अपने मुलाज़िमों को नोकर नहीं घर का फ़र्द समझते हैं (उन के मुलाज़िमों का दिल टटोला जाए तो ढोल का पोल सामने आ जाएगा कि इन बेचारों के साथ किस त़रह़ कुत्तों से भी बदतर सुलूक किया जा रहा होता है)

"या रवुदा मुझे ब क़दरे किफ़ायत रोज़ी दे" के बत्तीस हुरूफ़ की निस्बत से रिज़्क़ वग़ैरा के 32 रूह़ानी इलाज

तगंदस्ती के 11 रूह़ानी इलाज

﴾1﴿ "يَامُسَبِّبَ الْاَسْبَاب" 500 बार, अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ 11, 11 बार, बा'द नमाज़े इशा क़िब्ला रू बा वुज़ू **नंगे सर** ऐसी जगह पढ़िये कि सर और आस्मान के दरमियान कोई चीज़ ह़ाइल न हो, यहां तक कि सर पर टोपी भी न हो । इस्लामी बहनें ऐसी जगह पढ़ें जहां किसी अजनबी या'नी ग़ैर मह़रम की नज़र न पड़े ।

﴾2﴿ **يَابَاسِطُ** 100 बार नमाज़े चाश्त के बा'द पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **रोज़ी में ब-र-कत** होगी ।

﴾3﴿ يَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام 100 बार हर नमाज़ के बा'द पढ़ कर ह़लाल

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

रोज़गार के लिये दुआ़ करने वाले को اِنْ شَآءَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ रिज़्क़े ह़लाल मिलेगा।

﴾4﴿ يَااَللّٰهُ 786 बार बा'दे जुमुआ़ लिख लीजिये। इसे दुकान या मकान में रखने से रिज़्क़ बढ़ता और मालो दौलत में ब-र-कत होती है।

﴾5﴿ सुब्ह़े सादिक़ के बा'द नमाज़े फ़ज्र से पहले अपने मकान के चारों कोनों में खड़े हो कर يَارَزَّاقُ 10 बार पढ़िये اِنْ شَآءَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ कभी उस घर में **तंगदस्ती** न आएगी। त़रीक़ा येह है कि घर में सीधे हाथ के कोने से क़िब्ला रुख़ खड़े हो कर शुरूअ़ कीजिये और इस कोने से दूसरे कोने तक इस त़रह़ तिरछे चल कर जाइये कि चेहरा क़िब्ला रुख़ ही रहे और हर कोने में क़िब्ला रुख़ खड़े हो कर पढ़िये।

﴾6﴿ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ اَحْمَدُ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो शख़्स बा'द नमाज़े जुमुआ़ पाक साफ़ हो कर 35 बार येह लिख कर अपने पास रखे ख़ुदा तआ़ला उसे ग़ैब से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा और वोह शैत़ान के शर से भी मह़फ़ूज़ रहेगा।

﴾7﴿ يَالَطِيْفُ 100 बार पढ़ कर एक मर्तबा اَللّٰهُ لَطِيْفٌ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ [1] पढ़ने से रिज़्क़ में ब-र-कत होती है।

﴾8﴿ يَالَطِيْفُ 100 बार रोज़ाना बा'द नमाज़े फ़ज्र व मग़रिब पढ़ कर तीन मर्तबा येह दुआ़ पढ़ना रिज़्क़ में ब-र-कत के लिये निहायत मुफ़ीद है।

اَللّٰهُمَّ وَسِّعْ عَلَيَّ رِزْقِيْ، اَللّٰهُمَّ عَطِّفْ عَلَيَّ خَلْقَكَ كَمَا صُنْتَ وَجْهِيْ عَنِ السُّجُوْدِ لِغَيْرِكَ، فَصُنْهُ عَنْ ذُلِّ السُّؤَالِ لِغَيْرِكَ، بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ

﴾9﴿ يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ और يَاوَهَّابُ रोज़ाना एक एक हज़ार बार पढ़ना कशाइशे रिज़्क़ के लिये फ़ाएदे मन्द है।

[1] پ۲۵ سُورۃُ الشّوریٰ آیت:۱۹

﴿10﴾ हर नमाज़ के बा'द येह आयाते मुबा-रका पढ़ना रिज़्क़ के लिये बहुत अच्छा है। لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲۸﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿۱۲۹﴾ (پ۱۱ سورۃ التوبۃ آیت: ۱۲۸-۱۲۹)

﴿11﴾ बा'द नमाज़े फ़ज्र अव्वल आख़िर 14 मर्तबा दुरूद शरीफ़ और फिर يَاوَهَّابُ 1400 बार पढ़िये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कभी रिज़्क़ में ब-र-कत से महरूमी न होगी, बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उस की नस्लें भी रोज़ी की कसरत के सबब शादकाम रहेंगी।

﴿12﴾ रिज़्क़ में ब-र-कत का बे मिसाल वज़ीफ़ा

एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! दुन्या ने मुझ से पीठ फैर ली। फ़रमाया : क्या वोह **तस्बीह़** तुम्हें याद नहीं जो तस्बीह़ है फ़िरिश्तों और मख़्लूक़ की जिस की ब-र-कत से **रोज़ी** दी जाती है, जब सुब्हे सादिक़ तुलूअ़ हो तो येह तस्बीह़ एक सो बार पढ़ा करो, ''سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ، سُبْحٰنَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ، اَسْتَغْفِرُ اللّٰه'' दुन्या तेरे पास ज़लील हो कर आएगी। वोह सह़ाबी चले गए कुछ मुद्दत ठहर कर दोबारा ह़ाज़िर हुए, अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! दुन्या मेरे पास इस **कसरत** से आई, मैं ह़ैरान हूं, कहां उठाऊं कहां रखूं ! (الخصائص الکبریٰ ج۲ ص۲۹۹ مُلَخَّصاً) आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस तस्बीह़ का **विर्द** ह़त्तल इम्कान तुलूए़ सुब्हे सादिक़ के साथ हो, वरना सुब्ह़ से पहले, जमाअ़त क़ाइम हो जाए तो उस में शरीक हो कर बा'द को अ़दद पूरा कीजिये और जिस दिन क़ब्ले नमाज़ भी न हो सके तो ख़ैर तुलूए़ शम्स

www.dawateislami.net

(या'नी सूरज निकलने) से पहले। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 128 मुलख़्ख़सन)

﴾13﴿ साल भर में मालदार बनने का अ़मल

जो शख़्स तुलूए़ आफ़्ताब के वक़्त بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم 300 बार और दुरूद शरीफ़ 300 बार पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़ता फ़रमाएगा जहां उस का गुमान भी न होगा और (रोज़ाना पढ़ने से) اِنۡ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ एक साल के अन्दर अन्दर अमीरो कबीर हो जाएगा। **(شمس المعارف الکبری ولطائف العوارف ص۳۷)**

﴾14﴿ कारोबार चमकाने का नुस्ख़ा

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم **काग़ज़** पर 35 बार लिख कर घर में लटका दीजिये, اِنۡ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ शैत़ान का गुज़र न होगा और (रिज़्क़े ह़लाल में) ख़ूब ब-र-कत होगी, अगर दुकान में लटकाएंगे और जाइज़ कारोबार हुवा तो اِنۡ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ख़ूब चमकेगा। **(اَیضاً ص۳۸)**

﴾15﴿ मालो दौलत की ह़िफ़ाज़त के लिये

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ 97 बार पढ़ कर तिजोरी, ग़ल्ले (या'नी अनाज), गोदाम, माल वग़ैरा पर दम करने से اِنۡ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आफ़त व मुसीबत से मालो दौलत की ह़िफ़ाज़त होगी।

﴾16﴿ मुला-ज़मत मिलने का अ़मल

(ग़ैर मकरूह वक़्त में) दो रक्अ़त नफ़्ल अदा कीजिये और सलाम फैरने के बा'द **یَا لَطِیۡفُ** 182 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर जाइज़ और आसान मुला-ज़मत या ह़लाल रोज़गार मिलने के लिये दुआ़ कीजिये, اِنۡ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दुआ़ क़बूल होगी।

www.dawateislami.net

﴾17﴿ तबा-दले के लिये वज़ीफ़ा

ज़ोह्र की नमाज़ के बा'द 11 या 21 या 41 बार हर बार بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم के साथ **सू-रतुल्लहब** पढ़िये, اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ हस्बे ख़्वाहिश तबा-दला हो जाएगा।

﴾18﴿ इन्टरव्यू में काम्याबी के लिये

जाइज़ मुला-ज़मत वग़ैरा की ख़ातिर इन्टरव्यू देने के लिये जाना हो तो पहले येह पढ़ लीजिये : اَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡم بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم کٓہٰیٰعٓصٓ - حٰمٓ عٓسٓقٓ - فَسَیَکۡفِیۡکَہُمُ اللّٰہُ ۚ وَہُوَ السَّمِیۡعُ الۡعَلِیۡمُ - اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ **काम्याबी** हासिल होगी।

﴾19﴿ चोरी से हिफ़ाज़त हो

सू-रतुत्तौबह लिख या लिखवा कर प्लास्टिक कोटिंग करवा कर अपने सामान में रखिये, اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ **चोरी** से महफ़ूज़ रहेगा।

﴾20﴿ **یَاجَلِیۡلُ** (ऐ बुज़ुर्गी वाले) **10** बार पढ़ कर अपने माल व अस्बाब और रक़म वग़ैरा पर दम कर दीजिये, اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ **चोरी** से महफ़ूज़ रहेगा।

﴾21﴿ माल चोरी या माल गुम हो जाए, येह आयते मुबा-रका बे शुमार पढ़ने से मिल जाएगा, اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

یٰبُنَیَّ اِنَّہَاۤ اِنۡ تَکُ مِثۡقَالَ حَبَّۃٍ مِّنۡ خَرۡدَلٍ فَتَکُنۡ فِیۡ صَخۡرَۃٍ اَوۡ فِی السَّمٰوٰتِ اَوۡ فِی الۡاَرۡضِ یَاۡتِ بِہَا اللّٰہُ ؕ اِنَّ اللّٰہَ لَطِیۡفٌ خَبِیۡرٌ ﴿۱۶﴾

(پ۲۱ سُورۃُ لُقْمٰن آیت: ۱۶)

www.dawateislami.net

﴾22﴿ अगर काम धन्दे में दिल न लगता हो तो.....

یَااَللّٰہُ 101 बार काग़ज़ पर लिख कर ता'वीज़ बना कर बाज़ू पर बांध लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जाइज़ काम धन्दे और ह़लाल नोकरी में दिल लग जाएगा ।

﴾23﴿ ग़ुरबत से नजात

अगर घर में बीमारी और ग़ुरबत व नादारी ने बसेरा कर लिया हो तो बिला नाग़ा 7 रोज़ तक हर नमाज़ के बा'द یَارَزَّاقُ یَارَحْمٰنُ یَارَحِیْمُ یَاسَلَامُ 112 बार पढ़ कर दुआ़ कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **बीमारी, तंगदस्ती व नादारी** से नजात ह़ासिल होगी ।

﴾24﴿ अफ़्सर की नाराज़ी के तीन रूह़ानी इलाज

अफ़्सर (या निगरान) जिस से ख़फ़ा हो वोह بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ब कसरत पढ़ा करे या एक मर्तबा लिख कर बाज़ू पर बांध ले اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस का **अफ़्सर** (या निगरान) मेह्रबान हो जाएगा ।

﴾25﴿ **अगर** अफ़्सर या सेठ बात बात पर ग़ुस्सा करता और झाड़ता हो तो उठते बैठते हर वक़्त یَاحَیُّ یَاقَیُّوْمُ पढ़ते रहिये और तसव्वुर में अफ़्सर या सेठ का चेहरा लाते रहिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह आप पर मेह्रबान हो जाएगा ।

﴾26﴿ لَآاِلٰہَ اِلَّااللّٰہُ पढ़ कर या लिख कर बाज़ू वग़ैरा पर बांध कर ज़रूरतन किसी **ज़ालिम अफ़्सर** के दफ़्तर में जाने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस के शर से ह़िफ़ाज़त होगी ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

﴾27﴿ सामान, गाड़ी, घर बिक्वाने के लिये

فَلَمَّا اسْتَايْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ؕ قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَ مِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْۤ اَبِيْۤ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَ هُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿۸۰﴾ (پ۱۳ یوسف:۸۰)

येह आयते मुबा-रका पढ़ कर सामान या गाड़ी पर दम कर दीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सामान जल्द फ़रोख़्त हो जाएगा।

﴾28﴿ इन्सान गुम हो जाए तो

बच्चा या बड़ा गुम हो जाए तो सारे घर वाले बे शुमार बार **يَاجَامِعُ يَامُعِيْدُ** का विर्द करें। **अल्लाह तआ़ला** ने चाहा तो मिल जाएगा।

﴾29﴿ रिज़्क़ के दरवाज़े खोलना

اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **يَاوَهَّابُ** 300 बार बा'द नमाज़े फ़ज्र पढ़िये। रोज़गार की परेशानी दूर होगी। (मुद्दत : 40 दिन)

﴾30﴿ दीमक का इलाज

मकान या दुकान वग़ैरा में लगी हुई **दीमक** का اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ातिमा होगा, काग़ज़ पर येह अस्माए मुबा-रका लिख कर वहां लटका दीजिये : अव्वल ख़लीफ़ा सय्यिदुना ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ। दुवुम ख़लीफ़ा सय्यिदुना ह़ज़रत उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ। सिवुम ख़लीफ़ा सय्यिदुना ह़ज़रते उ़स्मान ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ। चहारुम ख़लीफ़ा सय्यिदुना ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ। पन्जुम ख़लीफ़ा सय्यिदुना ह़ज़रत ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا। शशुम ख़लीफ़ा सय्यिदुना अमीर मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

﴾31﴿ दीमक से ह़िफ़ाज़त

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ 41 बार पढ़ कर ज़ख़ीरा की हुई चीज़ों और किताबों वग़ैरा पर दम कर दिया जाए तो **दीमक** और दूसरे कीड़े मकोड़ों से اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ह़िफ़ाज़त होगी ।

﴾32﴿ सौदा मरज़ी के मुत़ाबिक़ हो

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ख़रीदारी करते वक़्त पढ़ते रहने से اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ चीज़ अच्छी और वोह भी अपनी मरज़ी के मुत़ाबिक़ मिलेगी ।

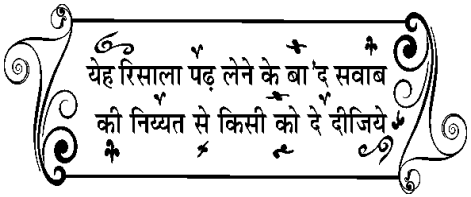

यह रिसाला पढ़ लेने के बा'द सवाब की निय्यत से किसी को दे दीजिये

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब
28 रबीउ़ल आख़िर 1436 सि.हि.
18-02-2015

ماٰخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن مجید		روض الریاحین	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر قرطبی	دارالفکر بیروت	بستان الواعظین	دارالکتب العلمیۃ بیروت
نورالعرفان	پیر بھائی کمپنی مرکز الاولیاء لاہور	القول البدیع	مؤسسۃ الریان بیروت
مسلم	دار ابن حزم بیروت	التعریفات	دارالمنار
ترمذی	دارالفکر بیروت	تعلیم المتعلم	باب المدینہ کراچی
ابن ماجہ	دارالمعرفۃ بیروت	خصائص الکبرٰی	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مسند امام احمد	دارالفکر بیروت	شرح الشفاء للقاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت
معجم اوسط	دارالکتب العلمیۃ بیروت	شمس المعارف الکبری	کوئٹہ
شعب الایمان	دارالکتب العلمیۃ بیروت	ردالمحتار	دارالمعرفۃ بیروت
الفردوس بماثور الخطاب	دارالکتب العلمیۃ بیروت	ملفوظات اعلیٰ حضرت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
جمع الجوامع	دارالکتب العلمیۃ بیروت	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
تاریخ اصبہان	دارالکتب العلمیۃ بیروت	سنی بہشتی زیور	فرید بک اسٹال مرکز الاولیاء لاہور
قوت القلوب	دارالکتب العلمیۃ بیروت	فرہنگ آصفیہ	سنگ میل پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور
احیاء العلوم	دار صادر بیروت	حدائق بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (مجمع الزوائد)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	तंगदस्ती से नजात	18
चिड़िया और अन्धा सांप	1	तंगदस्ती का इ़लाज	18
अल्लाह तआ़ला ने रोज़ी का ज़िम्मा लिया है	3	रोज़ी में ब-र-कत का बेहतरीन नुस्ख़ा	19
ग़रीबों के मज़े हो गए	4	ख़ाली घर में सलाम पेश करने का त़रीक़ा	19
फ़क़्र की ता'रीफ़	5	क्या मालदार होना बुरा है ?	20
फ़क़्र की फ़ज़ीलत पर 9 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم	6	ह़लाल माल की कसरत से कतराना	20
		मालदारों के झूट की 16 मिसालें	21
"राज़ी" की ता'रीफ़	7	रिज़्क़ वग़ैरा के 32 रूह़ानी इ़लाज	23
अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त जब किसी से महब्बत फ़रमाता है तो...	8	रिज़्क़ में ब-र-कत का बे मिसाल वज़ीफ़ा	25
उस के सर के नीचे पथ्थर का तक्या था	8	साल भर में मालदार बनने का अ़मल	26
फ़क़्र आक़ा की महब्बत की सौग़ात है	9	कारोबार चमकाने का नुस्ख़ा	26
हज़ार साल की इ़बादत से अफ़्ज़ल अ़मल	10	मालो दौलत की ह़िफ़ाज़त के लिये	26
एक हज़ार दीनार स-दक़ा करने से अफ़्ज़ल अ़मल	10	मुला-ज़मत मिलने का अ़मल	26
तुम्हारी दुआ़ मेरी दुआ़ से अफ़्ज़ल है	10	तबा-दले के लिये वज़ीफ़ा	27
दुख़्यारों की दुआ़ क़बूल होती है	11	इन्टरव्यू में काम्याबी के लिये	27
ग़रीब शहज़ादे पर आ'ला ह़ज़रत की	11	चोरी से ह़िफ़ाज़त हो	27
इन्फ़िरादी कोशिश		अगर काम धन्दे में दिल न लगता हो तो...	28
ह़ाजत छुपाने की फ़ज़ीलत	12	ग़ुरबत से नजात	28
दो मछली के शिकारी	12	अफ़्सर की नाराज़ी के तीन रूह़ानी इ़लाज	28
जहन्नम में मालदार अफ़राद और औ़रतों की ता'दाद ज़ियादा	13	सामान, गाड़ी, घर बिक्वाने के लिये	29
		इन्सान गुम हो जाए तो	29
औ़रत के सोने के ज़ेवरात पर भी ज़कात फ़र्ज़ हो सकती है	14	रिज़्क़ के दरवाज़े खोलना	29
घर में मुठ्ठी भर आटा नहीं और आप...	15	दीमक का इ़लाज	29
शिक्वा नहीं करना चाहिये	15	दीमक से ह़िफ़ाज़त	30
तंगदस्ती के "44" अस्बाब	16	सौदा मरज़ी के मुत़ाबिक़ हो	30

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नया चांद देख कर येह दुआ पढ़ना सुन्नत है !

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब हिलाल देखते तो येह दुआ पढ़ते :

اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهٗ عَلَيْنَا بِالْاَمْنِ وَالْاِيْمَانِ، وَالسَّلَامَةِ وَالْاِسْلَامِ، رَبِّيْ وَرَبُّكَ اللّٰهُ۔

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इसे हम पर अम्नो ईमान, सलामती और इस्लाम के साथ तुलूअ़ फ़रमा, (ऐ चांद !) मेरा और तेरा रब, **अल्लाह** तआ़ला है ।

(المستدرک ج ۵ ص ۳۰۵ حدیث ۷۸۳۶)

क़-मरी महीने की पहली, दूसरी और तीसरी रात के चांद को हिलाल कहते हैं, इस के बा'द की रातों के चांद को क़मर कहते हैं ।

(مرقاۃ المفاتیح ج ۵ ص ۲۸۳)

येह दुआ पहली, दूसरी, और तीसरी रात तक पढ़ सकते हैं ।

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदराबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदराबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net